स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन 2013

BIHAR YOGA

गुरु शिष्य सम्बन्ध

स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती

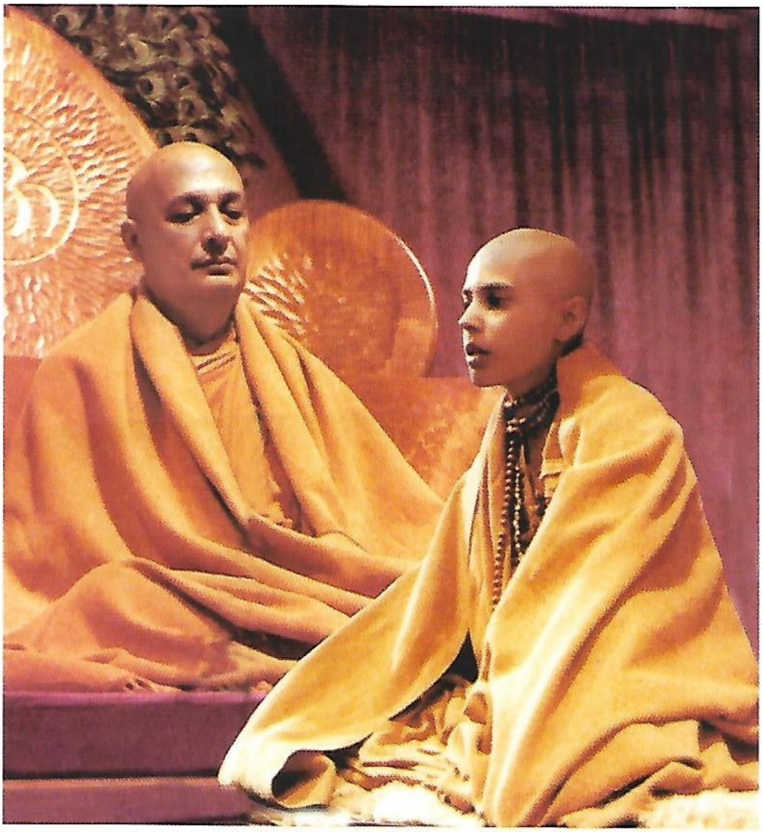

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

गुरु शिष्य सम्बन्ध

University Department of Yoga
No/PG/DY/....101......

PG Department of Yoga
Ranchi University, Ranchi

BIHAR SCHOOL OF YOGA
50 years
1963–2013
GOLDEN JUBILEE

WORLD YOGA CONVENTION 2013
GANGA DARSHAN, MUNGER, BIHAR, INDIA
23rd–27th October 2013

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

आत्मार्पण	3
गुरु की आवश्यकता	5
गुरु कैसे प्राप्त करें?	12
गुरु को कैसे पहचाने?	19
गुरु की सार्थकता	23
गुरु तत्त्व	28
गुरु की श्रेणियाँ	31
शिष्य की श्रेणियाँ	43
गुरु-आज्ञा पालन	61
गुरु के प्रति नकारात्मकता	64
शिष्य का अहंकार	67
समर्पण	71
सम्प्रेषण	76
गुरु-कृपा	80
गुरु – माता-पिता एवं मित्र	84
दीक्षा	89
गुरु एक ही होना चाहिए	94
गुरु-दक्षिणा	96
मन्त्र	103
गुरु-सेवा	108

ईश्वर रूप गुरु 117
हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती 120
गुरु भूमि–भारत 124
उपसंहार 127

द्वितीय खण्ड–स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रवचन

शिष्यत्व ही योग का प्रारम्भ है 136
गुरु का चयन 146
सम्बन्ध की स्थापना 149
गुरु की अन्तरात्मा से सम्बन्ध जोड़ना 152
गुरु परम्परा 162
अपरिहार्य उपादान 166
गुरु की भूमिका 171
श्रद्धा–एक अपरिमेय शक्ति 181
गुरु की विशिष्टता 192
अहंकार का विसर्जन 195
सम्प्रेषण एवं शिक्षण 209
सम्प्रेषण का रहस्य 212
गुरु को कहाँ खोजें? 224
प्रत्येक गुरु एक प्रकाश है 229
एकनिष्ठा का महत्त्व 235
क्या गुरु की प्रशंसा करनी चाहिए? 238
मुक्त मन 241
एक शिष्य की कहानी 247
भक्ति कैसे जगायें? 250
शिष्य को निर्देश 252
गुरु एक मनोचिकित्सक 259
गुरु प्रहरी नहीं हैं 263
गुरु कृपा ही केवलम् 266
स्वामी शिवानन्द 276
गुरु स्तोत्रम् 290

हं
क्षं

SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

अनेक लोग तर्क करते हैं कि गुरु आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि वास्तविक गुरु तो हमारे अन्दर ही हैं। यह सच है, परन्तु कितने लोग उनके निर्देशों को सुनने, समझने एवं अनुसरण करने का दावा कर सकते हैं। आप चाहे जो हों या जैसे हों, गुरु आपके जीवन की आवश्यकता हैं। गुरु शुद्ध देदीप्यमान अन्तरात्मा हैं, जो अज्ञानान्धकार का उन्मूलन करते हैं। एक बार गुरु से सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर काल इसे नहीं बदल सकता और न मृत्यु ही इसे मिटा सकती है।

स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती द्वारा रचित एवं संकलित यह पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में गुरु को कैसे पहचाने, गुरुओं के प्रकार, शिष्यों के प्रकार, गुरु के प्रति नकारात्मक भाव, दीक्षा आदि अध्यायों का समावेश किया गया है। द्वितीय खण्ड में चुने हुए सत्संगों का संकलन है; विषय हैं– गुरु के साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध जोड़ना, अहंकार का अर्पण, संचारण के रहस्य, प्रत्येक गुरु एक प्रकाश पुंज, आदि। यह पुस्तक जिज्ञासुओं और साधकों की गुरु सम्बन्धी लगभग सभी मुख्य जिज्ञासाओं का समाधान करेगी एवं उनके लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करेगी।

YOGA PUBLICATIONS TRUST

ISBN 978-81-85787-98-5

9 788185 787985